International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 35 March – April - 2026

हिंदी साहित्य और पर्यावरण - नव संकल्पनाएँ

(डॉ. परशुराम शुक्ल लिखित बाल साहित्य के विशेष संदर्भ में)

डॉ. भरत शेनकर[1], वसुंधरा देसाई[2]

[2]शोधार्थी

Corresponding Author – डॉ. भरत शेनकर

DOI - 10.5281/zenodo.20485689

सार:

पर्यावरण संरक्षण आज के युग की सबसे अहम समस्या है । हर देश अपने तरीके से इसका समाधान ढूंढने का प्रयास कर रहा है। यह भी वास्तव है कि यह कार्य केवल सरकारी स्तर पर संभव नहीं है। इसमें देश के नागरिकों का सक्रिय सहभाग आवश्यक है । इसके लिए जनजागृति की आवश्यकता पड़ रही है, यह एक त्रासदी है। भारतीय संस्कृति ने हमेशा पर्यावरण को प्राधान्य दिया ।उसके महत्व के कारण उसे विविध त्योहारों के साथ जोड़ा ।पर्यावरण को जनजीवन का अभिन्न अंग बनाया ।किंतु आज के आधुनिक युग में हमारा भारतीय नागरिक यह सब भूल गया। जीवनोपयोगी नैतिक मूल्यों के संस्कार बचपन से ही मानव मन पर हो तो वह जीवन भर के लिए उसके साथ बने रहते हैं । इसी यथार्थ को सम्मुख रखते हुए डॉ. परशुराम शुक्ल ने अपनी कहानियों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन का महत्व बाल पाठकों तक पहुँचाया ।आज यह हम सब की जिम्मेदारी और कर्तव्य भी है कि हम पर्यावरण को उसकी गरिमा लौटा दे ।

बीज शब्द: पर्यावरण, संस्कृति, त्योहार, नैतिक मूल्य, संरक्षण, संवर्धन, जिम्मेदारी, कर्तव्य

अनादि काल से मानव और पर्यावरण का अटूट संबंध रहा है। बिना प्राकृतिक संसाधनों के मनुष्य का जीवन संभव नहीं। मनुष्य पूर्णत: पर्यावरण पर निर्भर है। जल,वायु,भूमि, यह मनुष्य के जीवन के आधार है। पृथ्वी पर मनुष्य मात्र के साथ प्राणियों का जीवन भी पंचमहाभूतों पर अवलंबित है। भूमि पर वृक्ष संपदा पर्यावरण के संतुलन को बनाए रखती है।

हमारे भारतीय त्योहार प्रकृति के साथ जुड़े हुए हैं। प्रकृति में जो ऋतु चक्र है, उसके अनुसार हमारे सभी तीज त्यौहार मनाए जाते हैं। भारतीय संस्कृति में पर्यावरण का महत्व, संरक्षण,संवर्धन अधोरेखित होता है। वट पूर्णिमा केवल वटवृक्ष को धागा बाँधने की या लपेटने की परंपरा नहीं है, तो उसके पीछे हवा को शुद्ध रखने वाले और मिट्टी को बाँधकर रखने वाले दीर्घायु वटवृक्ष के संरक्षण का संदेश है। मकर संक्रांति तिल और गुड़ के साथ फसलों का त्यौहार है। छठ पूजा पर नदियों की पूजा या रक्षाबंधन पर समुद्र पूजन यह सभी यही बात बताते हैं कि भारतीय संस्कृति की जड़े पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण संतुलन के साथ जुड़ी हुई हैं। आज संपूर्ण दुनिया को फिर से एक बार भारतीय संस्कृति का महत्व विदित हो रहा है। संपूर्ण भारतीय साहित्य और दर्शन पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देता है। तुलसी, नारियल, सुपारी, खाने का पान, बरगद आदि पेड़ों को पूजने के पीछे उनके औषधि गुण और उनका पर्यावरण में महत्व जुड़ा हुआ है।

हिन्दी साहित्य ने प्रकृति की सुंदरता के हर पहलू को अपने लेखन को आकर्षक बनाने के लिए प्रयुक्त किया है। प्रकृति के सुंदर बिम्ब-प्रतीकों का मुक्तहस्त प्रयोग हिन्दी काव्य एवं कथा साहित्य में हुआ है। हमारे देश में प्रकृति ने जो अनुपम सौन्दर्य अपने सहस्त्रों भुजाओं से बिखेरा है, उसे शब्दबद्ध करने में हमारे हिन्दी साहित्यकार स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करतें हैं। हिंदी साहित्य में भी रचनाकारों में पर्यावरण संरक्षण को के संदेश को साधन में दिया है। रामचरित मानस के अरण्यकाण्ड के पंचवटी वर्णन में संत तुलसीदास सीता और लक्ष्मण के माध्यम से वृक्षारोपण का संदेश देते हैं,

"तुलसी तरुवर विविध सुहाए।
कहुं-कहुं सिय, कहुं लखन लगाए।।"[1]

फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला आँचल' से लेकर नागार्जुन लिखित 'बाबा बटेसरनाथ', तथा संजीव द्वारा लिखित 'जंगल जहां शुरू होता है 'आदि आंचलिक उपन्यासों में पर्यावरण के साथ मनुष्य का घनिष्ठ नाता और प्रकृति पर आक्रमण के कारण वहाँ के जन जीवन पर हो रहे विपरीत परिणामों को भी चित्रित किया है। वीरेंद्र जैन के 'पार' और 'डूब', नासिरा शर्मा का उपन्यास कुइयाँजान आदि उपन्यास पर्यावरण ऱ्हास की ओर ध्यान आकृष्ट करते हैं। सजग साहित्यकार समाज में व्याप्त समस्याओं के प्रति पाठकों को जागरूक करना अपना परम कर्तव्य समझता है। प्रेमचंद, सुमित्रानंदन पंत, सियारामशरण गुप्त, दिनकर, मैथिलीशरण गुप्त आदि महान साहित्यकारों ने प्रकृति शोषण के विरुद्ध जन जागृति करने के लिए अपनी कलम चलाई है। रणेद्र लिखित 'ग्लोबल गाँव के देवता' बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, ग्लोबल वार्मिंग, शहरीकरण, साम्राज्यवाद आदि समस्याओं को मुखर करता है।

आज के समय की पर्यावरण संबंधित उत्कृष्ट कृति है, अनुपम मिश्र लिखित 'आज भी खरे है तालाब'। ज्ञानोदय जैसी कुछ जानी-मानी पत्रिकाओं ने भी जल संरक्षण पर विशेष पत्रिकाओं का प्रकाशन किया है। कहा भी जाता है कि अगर तीसरा महायुद्ध कभी होगा, तो शायद इसका मुख्य कारण जल ही हो सकता है। 2005 में नासिरा शर्मा रचित पानी की समस्या को उजागर करनेवाला एक महत्वपूर्ण उपन्यास है, 'कुइयाँजान'। यह उपन्यास केवल जल संकट और दूषित जल की समस्या को ही प्राधान्य नहीं देता, बल्कि उससे जूझते मानव को हमारे पारंपारिक जल स्त्रोतों के महत्व एवं संवर्धन की ओर भी अग्रेसर करता है। निर्विवाद रूप से सामायिक विषयों पर यह एक सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है।

इसी शृंखला में आगे राजकमल प्रकाशन द्वारा 2012 में प्रकाशित झारखंड के हाशिये पर स्थित आदिवासी जीवन की त्रासदी, खनन उद्योग से आहत प्रकृति और उससे निर्मित प्रदूषण की समस्याओं का ज्वलंत चित्रण है, डॉ. महुआ माझी द्वारा रचित उपन्यास 'मरंग गोंडा नीलकंठ हुआ'। प्रकृति विनाश को ही देश का विकास माना जा रहा है। विकास के नाम पर रास्ते, बाँध, इमारतें अन्य सुख सुविधाओं के लिए बड़ी मात्रा में पेड़ों की कटाई हो रही है। पर्यावरण में प्रदूषण बढ़ने के कारण पृथ्वी पर सजीव सृष्टी खतरे में पड़ गई है। कई घरों में परिवारों के सदस्यों से भी अधिक वाहनों की संख्या है। हर किसी को एक दो पहिया वाहन और एक चौपहिया मोटर कार की आवश्यकता महसूस हो रही है

बढ़ती आबादी के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर अतिरिक्त भार पड़ रहा है। आबादी की तुलना में प्राकृतिक संसाधनों के बढ़ाने की गति अत्यंत धीमी है। शहरों में बढ़ती आबादी के कारण ही हवा, जल और भूमि प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण की समस्याएँ विकराल रूप धारण किए हुए हैं। पर्यावरण की समस्या मनुष्य ने निर्माण की हुई है और मनुष्य ही इसका हल निकाल सकता है।

समाजशास्त्र के अध्ययनकर्ता परशुराम शुक्ल ने हिंदी बाल कहानियों के माध्यम से हमारी आने वाली पीढ़ी को पर्यावरण साक्षर बनाने का सफल प्रयास किया है। शुक्ल जी की कहानियों में वृक्ष, फूल, फल, पशु-पक्षी सभी बच्चों के अंतरंग मित्र बन जाते हैं। उन्होंने फंतासी के माध्यम से न केवल वृक्ष कथाएँ लिखि, तो भारत के सभी राज्यों के राज्यपुष्प, राज्यपक्षी, राज्यप्राणी आदि सभी के बारे में बच्चों का ज्ञानवर्धन करने के साथ ही उनके प्रति उनकी जिम्मेदारी का एहसास भी करवाया है। उनकी एक कविता सामाजिक समस्याओं के प्रति लेखक का कर्तव्य क्या होता है? यह प्रमाणित करती है-

"हाल देखकर वन उपवन के, सारे पशु घबराए।
मीटिंग करने इसी बात पर, नदी किनारे आए।
सबसे पहले बोला हाथी, कैसे काम चलाऊँ?
पेड़ काटे जंगल के सारे, बोलो मैं क्या खाऊं?"[2]

पर्यावरण क्या है और हमें उसका संरक्षण और संवर्धन किस प्रकार करना है? यह समझाते हुए शुक्ल जी ने कहा है -

"जो हैं चारों तरफ हमारे, पर्यावरण उसे कहते हैं।
ध्वनि,मिटटी,जल,वायु आदि सब इसके अंतर्गत रहते हैं।
कान फोड़ती सारी ध्वनियाँ, ध्वनि प्रदूषण उपजातीं हैं।
बहरेपन से हृदय रोग तक, सभी व्याधियाँ ये लाती हैं। " [3]

शहर में बढ़ते वायु प्रदूषण की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए शुक्ला जी लिखते हैं -

"गाँव शहर क्या मैं बतलाऊँ।
इनमें अंतर तुम्हें दिखाऊँ।।
जहर भरी जलवायु शहर की।
स्वच्छ हवा में मैं लहराऊँ।। "[4]

उनके लिखे पर्यावरण संबंधी सूचनात्मक साहित्य को सभी स्तरों पर सराहा गया। भारत सरकार के पर्यावरण एवं वन्य मंत्रालय' ने 1992 में 'केयर फॉर एनवायरमेंट' प्रतियोगिता आयोजित की थी, उसमें बाल कविता 'वृक्ष कथा' को प्रथम पुरस्कार मिला। भारतीय संस्कृति के अनुरूप ही शुक्ल जी ने वृक्षों को पूजने का महत्व बताया। किस प्रकार हमेशा वृक्ष मनुष्य की सहायता करते हैं, यह अलग-अलग प्रसंगों द्वारा चित्रित किया।

'चमत्कारी वृक्ष'कहानी में बताया है कि किस प्रकार बगीचे में प्रकट हुआ एक नया वृक्ष रानी की मदद करता है और उसकी बेटी को बीमारी से मुक्त कर देता है। अशोक वृक्ष की कहानी बताते हुए शुक्ल जी लिखते हैं - "पुरानी रानी की बेटी जो हमेशा बीमार रहती थी और बीमारी के कारण ही चिड़चिड़ी हो गई थी, पूरी तरह निरोगी हो गई। "[5] ऐसे प्रसंगों से बच्चों को वृक्ष के प्रति आत्मीयता बढ़ जाती है। ऐसा ही एक अन्य उदाहरण हमें 'बासुँरी का जादू' इस कहानी में मिलता है। जहाँ कई दिनों से अचेत राजकुमारी का इलाज सुगंधी फूलों से लदा हुआ एक वृक्ष कर देता है। उस फूल की सुगंध राजकुमारी को बीमारी से मुक्त कर देती है। लेडीज स्लीपर आर्किड़े वृक्ष के औषधि गुणों के बारे में बताते हुए शुक्ल जी लिखते हैं "वह बाँसुरी बजाते हुए जिस वृक्ष के नीचे से गुजरता, वह वृक्ष फूलों से लद जाता। इसी समय राजकुमारी को होश आ गया। ……….. उनकी सुगंध से पूरा वातावरण महक रहा था। "[6] ऐसे उदाहरण बच्चों को वृक्षों के औषधि और गुणों से परिचित कराते हैं । पर्यावरण के साथ खिलवाड़ करने से उसके दुष्परिणाम भी मानव समाज को एवं सजीव सृष्टी को भुगतने में पडतें हैं। भोपाल गैस दुर्घटना के बारे में लिखि 'भयानक त्रासदी' कहानी इसी की ओर संकेत करती है।

हमारे देश में हजारों वर्षों से उपलब्ध है इस वृक्ष संपदा एवं जड़ी बूटियाँ के औषधि गुणों के वर्णन तो इन कहानियों में इत्र तत्र पाए जाते हैं। गंभार, बुरांस,चंदन आदि वृक्षों की कहानियाँ भी मनोरंजन के माध्यम से उनका महत्व विशद करती हैं। 'स्वर्ग के प्रहरी' कहानी में बताए

गए ताड़ वृक्ष भी यह संदेश देते हैं कि यह सभी वृक्ष मानव एवं पर्यावरण के सहायता एवं सुरक्षा के लिए ही है।

कस्तूरी मृग विलुप्ति के कगार पर है तो कृष्ण मृग जैसे हिरनों की संख्या तेजी से कम हो रही है। इस संदर्भ में भी लेखक चिंता व्यक्त करते हैं। " इसी कस्तूरी के लिए इस हिरण का इतना अधिक शिकार किया गया कि यह अभी विलुप्ति के कगार पर है। .... किसी समय भारत में कृष्ण मृग की संख्या लाखों में थी किंतु अब दस हजार से भी कम कृष्ण मृग शेष बचे हैं। "

सूचनात्मक बाल साहित्य के प्रणेता डॉ.परशुराम शुक्ल की लिखी सूचनात्मक बाल साहित्य की लगभग 100 पुस्तके हैं। जिसमें पशु-पक्षी, पेड़-पौधे तथा वन्यजीवों पर आधारित किताबें अधिक हैं। मानव का मित्र साँप, लोमड़ी एक रूप अनेक, गवय एक रूप अनेक, पक्षियों का रोचक संसार, देश-विदेश के रोचक वन्य जीव, राष्ट्रीय वृक्ष और राज्य वृक्ष, हमारे राजकीय पशु-पक्षी, हमारे राजकीय वृक्ष और पुश-पक्षी, भारतीय वन्यजीव, विश्व के विचित्र समुद्री जीव, सागरों और महासागरों के विलक्षण जीव(दो खंड), भारत के प्राकृतिक प्रतिक, विश्व के रोचक वन्यजीव, भारतीय हिरनों का अनोखा संसार, विश्व की रोचक मछलियाँ, देश-विदेश के रोचक वन्यजीव, देश-विदेश के रोचक जलचर, विश्व के रोचक जीव-जंतु, जलचरों का विचित्र संसार, भारत के अभिनव वन्यजीव, हमारे रोचक वन्यजीव, भारतीय पक्षी, पक्षी जो उड़ नहीं सकते, रंग-बिरंगा सुंदर पक्षी नीलकंठ, भारत का सबसे बड़ा विषैला सर्प: नागराज, प्रकाश उत्पन्न करने वाले जीव, विद्युत उत्पन्न करने वाले जीव, विश्व के अद्भुत जलचर, सागरों और नदियों के विचित्र जलचर। भारत के साथ ही विश्व के सभी पशु-पक्षियों के संदर्भ में सूचनात्मक लेखन लिखते हुए अनेक नामशेष हो रही प्रजातियों के बारे में भी हमारी जिम्मेदारी का एहसास करना शुक्ल जी भूलते नहीं है।

समग्रत: यह कह सकते हैं कि पृथ्वी पर अखिल प्राणीमात्र का जीवन तभी तक संभव है, जब तक पृथ्वी पर प्रकृति का संतुलन बना रहेगा। मानव प्रकृति का विनाश करके स्वयं के विनाश के द्वार ही खोल रहा है। हिंदी साहित्य के सभी साहित्यकारों ने प्रकृति के प्रति जागरूकता निर्माण करने में अपना उत्तरदायित्व भली-भाँती निभाया है। अगर बचपन से ही हम प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारी का एहसास करवाते हैं, तो इस समस्या का हल कुछ मात्रा तक आसान हो सकता है। और शायद डॉ. शुक्ल जैसे सिद्धहस्त बाल साहित्यकार के सफल प्रयत्नों से हमारी आने वाली पीढ़ी पर्यावरण संरक्षण के प्रति अधिक सजग एवं यशस्वी हो सकती है।

संदर्भ सूची:

1. तुलसीदास, रामचारित मानस, अरण्यकाण्ड, पंचवटी वर्णन
2. परशुराम शुक्ल, मंगल ग्रह जायेंगे, विज्ञान भारती, गाजियाबाद, 2008, पृष्ठ.-77
3. परशुराम शुक्ल, तिरंगा, जनवाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ-.48
4. परशुराम शुक्ल, मेरा रोबो बड़ा निराला,जनवाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2017, पृष्ठ-27
5. डॉ. शुक्ल परशुराम, राजा-रानी की बाल कहानियां, विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर ,2016,पृष्ठ-38
6. उपर्युक्त,पृष्ठ-45
7. डॉ.शुक्ल परशुराम, जंगल की बाल कहानियाँ, विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2015,पृष्ठ-24, 25